E-Content

Master of Arts (History)

Darbhanga House, Patna University, Patna-800005

Semester-II

Course Code-CC-VI

Course Name: (History of Europe & Modern World 1919-2000)

Unit-IV

# राष्ट्र संघ की विफलता- द्वितीय विश्वयुद्ध का एक कारण

अविनाश कुमार

सहायक प्रोफेसर -इतिहास

पटना कॉलेज, पटना

6202393206 & avinashisavailable@gmail.com

# राष्ट्र संघ की असफलता:

- आज हमारे पास संयुक्त राष्ट्र संघ के रूप में एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है जो वैश्विक मुद्दों का समाधान करती है। इसकी सफलता का सबसे बड़ा पैमाना यह है कि इसने अभी तक तीसरा विश्वयुद्ध नहीं होने दिया है। ऐसा नहीं है कि इसकी स्थापना के बाद युद्ध नहीं हुए हैं, हुए तो हैं पर ये एक क्षेत्र में ही सिमट कर रह गए और यूएनओ के हस्तक्षेप से उन्हें यथासंभव कम समय में रोक दिया गया है। इसके बरक्स इसका पूर्ववर्ती राष्ट्र संघ ऐसा करने में सर्वथा विफल रहा था, जिसकी परिणति द्वितीय विश्वयुद्ध के रूप में हुई।

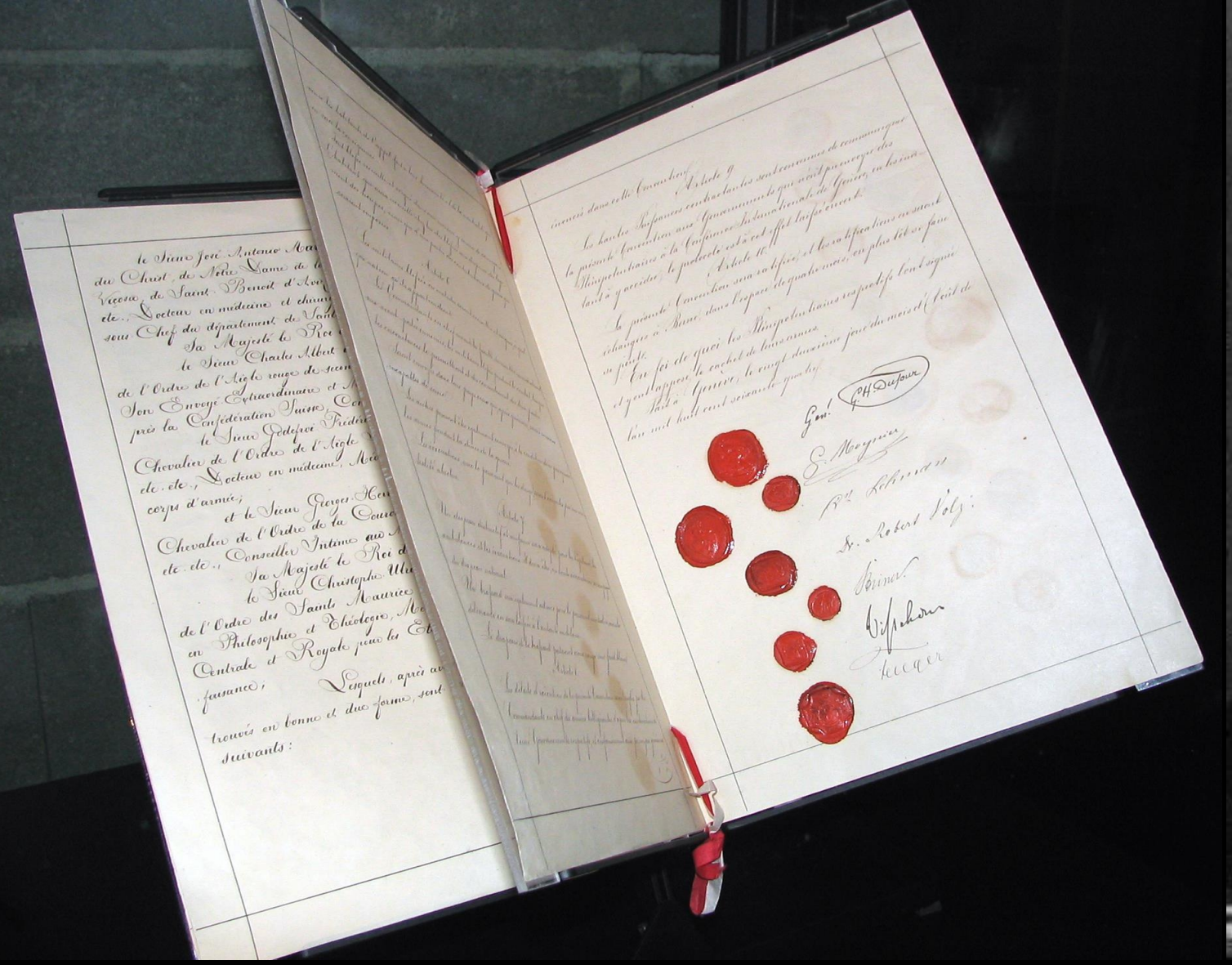

जेनेवा समझौता-1864 वह पहला दस्तावेज़ था जिसमें एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की बात की गई थी।

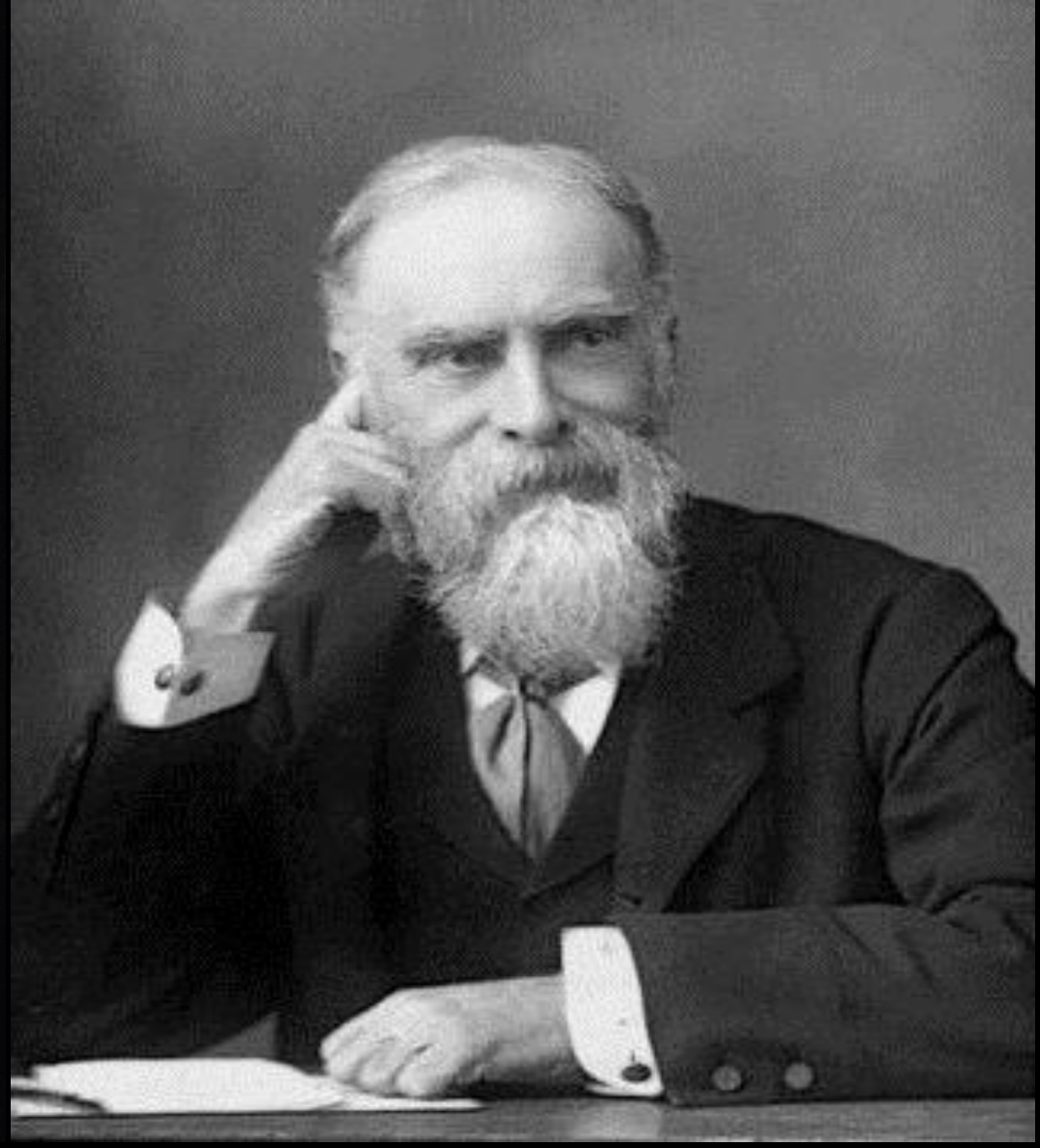

लॉर्ड ब्राइस उन शुरुआती लोगों में थे जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थ संस्था की वकालत की थी

जेनेवा स्थित यह भवन 1936 से 1946 तक राष्ट्रसंघ का मुख्यालय रहा

जब तक इसका यूएनओ में विलय नहीं हो गया

# वुसरो विल्सन की याद में राष्ट्र संघ मुख्यालय के बाहर लगी पट्टिका

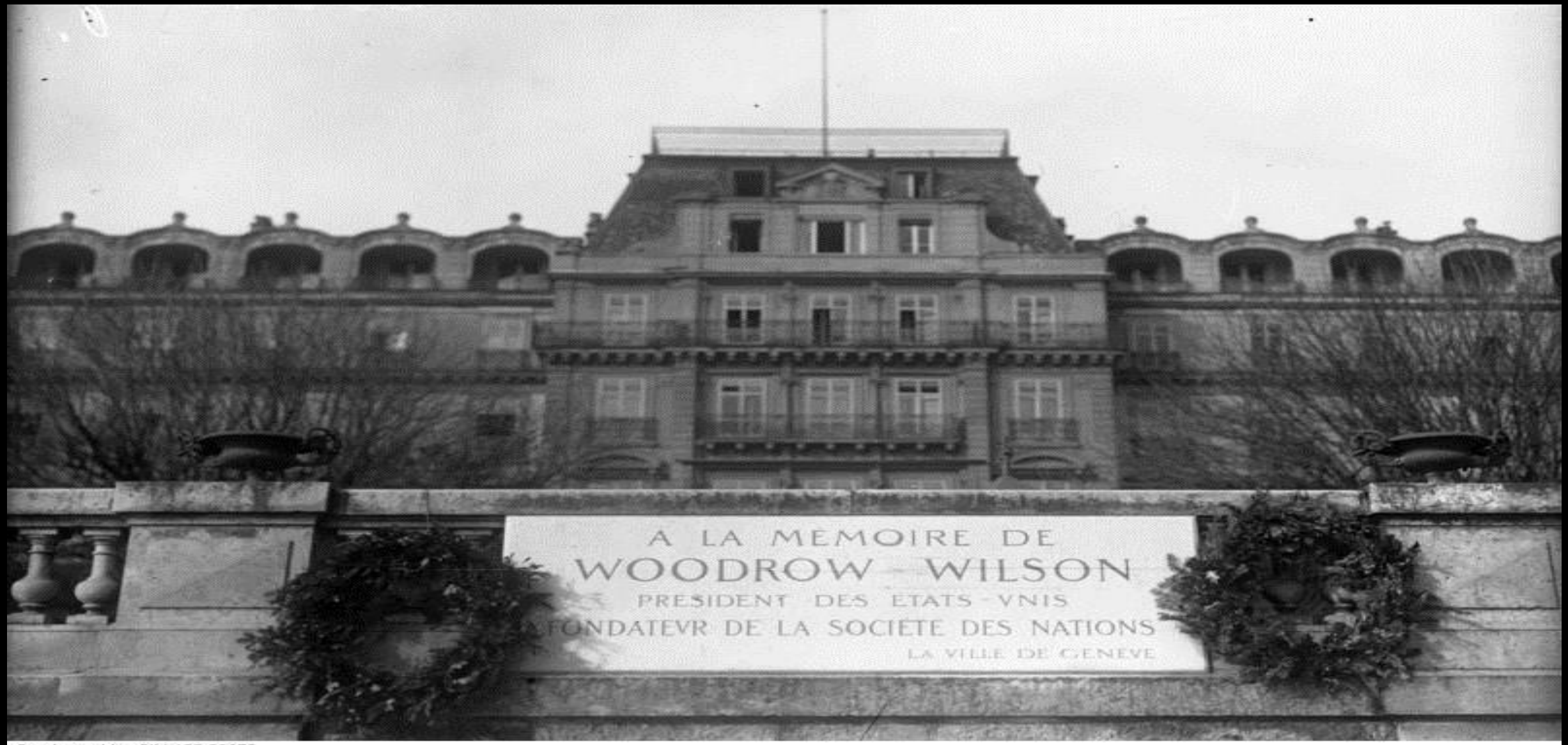


Bundesarchiv, Bild 102-00678
Foto: o.Ang. | 1928 ca.

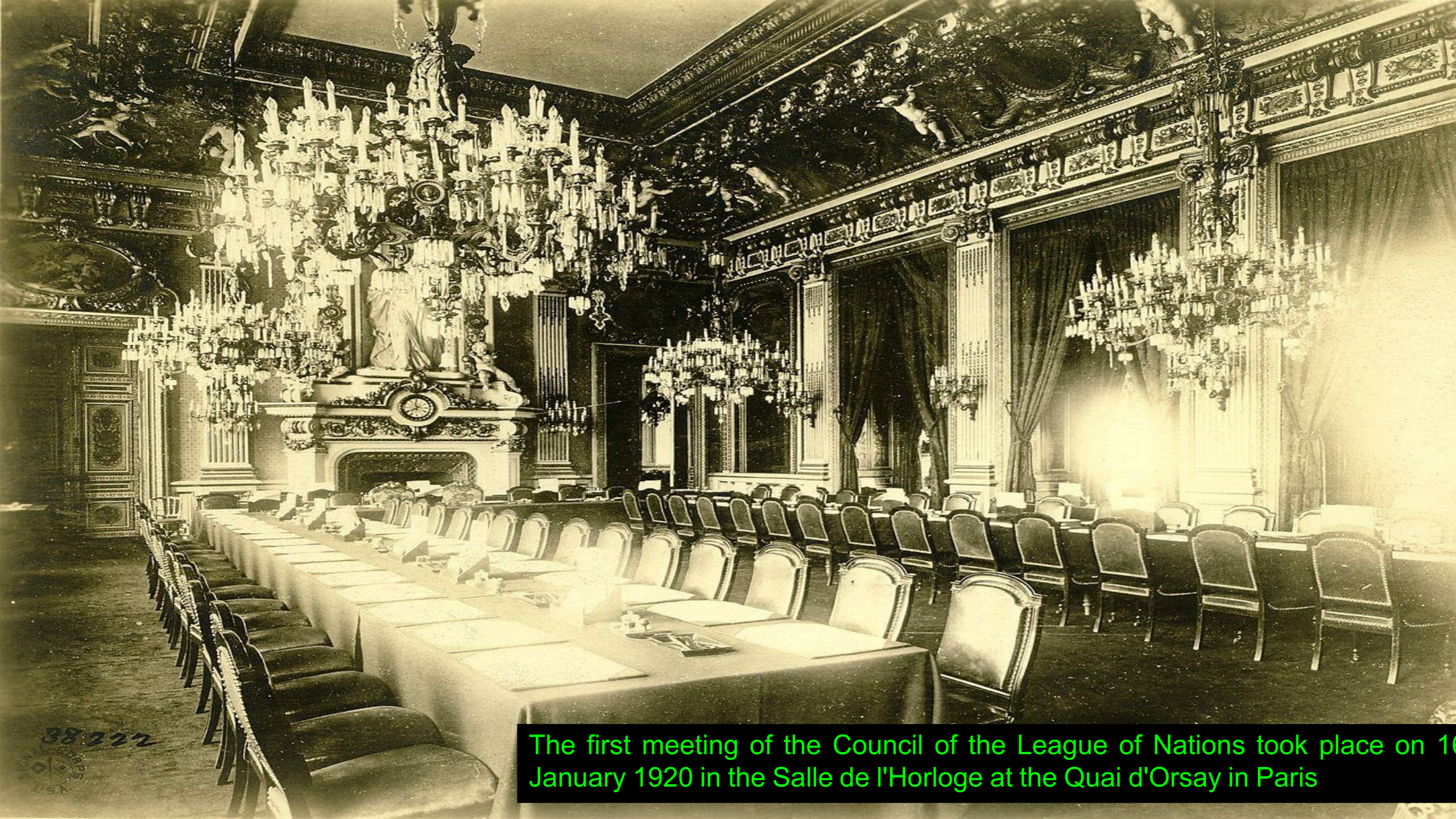


The first meeting of the Council of the League of Nations took place on 16 January 1920 in the Salle de l'Horloge at the Quai d'Orsay in Paris

The first meeting of the Assembly of the League of Nations took place on 15 November 1920 at the Salle de la Reformation in Geneva

THE GAP IN THE BRIDGE.

**The Gap in the Bridge**; the sign reads "This League of Nations Bridge was designed by the President of the U.S.A." Cartoon from *Punch* magazine, 10 December 1920, satirising the gap left by the US not joining the League.

- वर्साय संधि के कई प्रावधानों में एक प्रावधान अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए एक वैश्विक संस्था के रूप में राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस) की स्थापना का भी था। यह कहा गया था कि "इसका उद्देश्य के तांडव से आने वाली पीढ़ियों की रक्षा करना है, संसार को प्रजातंत्र के लिए सुरक्षित स्थान बनाना है और एक ऐसी शांति की स्थापना करना है जो न्याय पर आश्रित हो।" किंतु यह मानवता का दुर्भाग्य था कि राष्ट्र संघ अपने महान आदर्शों, महत्वाकांक्षी सपनों और उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल नहीं हो सका। राष्ट्र संघ की असफलता के कारण निम्नलिखित थे-

LEAGUE OF NATIONS
SOCIÉTÉ DES NATIONS

- **उग्र राष्ट्रीयता** – राष्ट्र संघ की विफलता का एक कारण विभिन्न राष्ट्रों की उग्र राष्ट्रीयता थी। प्रत्येक राष्ट्र स्वयं को संप्रभु समझते हुए अपनी इच्छा अनुसार कार्य करने में विश्वास करते थे। कोई भी राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए अपने प्रभुसत्ता पर किसी का नियंत्रण स्थापित करने को तैयार नहीं था। राष्ट्र संघ के मौलिक सिद्धांत भले ही नये थे, किंतु उनके सदस्य राष्ट्र परंपरागत राष्ट्रीयता की संकीर्ण विचारों पर विश्वास करते थे।

- **सार्वभौमिकता का अभाव** – विश्व शांति के लिए आवश्यक था कि विश्व के सभी देश राष्ट्र संघ के सदस्य होते, किंतु ऐसा नहीं हो सका। प्रारंभ में सोवियत संघ और जर्मनी को संगठन से अलग रखा गया। 1926 में जर्मनी को इसका सदस्य बना दिया गया, किंतु कुछ समय पश्चात ब्राज़ील और कोस्टारिका इससे अलग हो गए। 1933 में जापान और जर्मनी ने इसकी सदस्यता त्यागने का नोटिस दे दिया। 1934 में रूस इसका सदस्य बना। 1937 में इटली ने इसकी सदस्यता त्यागने का नोटिस दे दिया। 1939 में सोवियत संघ को राष्ट्र संघ से निकाल दिया गया। इस प्रकार राष्ट्र संघ के 20 वर्ष के जीवन में ऐसा कोई अवसर नहीं आया, जब विश्व के सभी देश इसके सदस्य रहे हो।

- **अमेरिका का सदस्य न बनना** - अमेरिकन राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन ने राष्ट्र संघ की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई किंतु अमेरिका सीनेट ने सदस्यता के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इसलिए राष्ट्र संघ को अमेरिका का सहयोग नहीं मिल सका। अमेरिका का राष्ट्र संघ का सदस्य बनने के कारण संगम के जीवन पर निम्नलिखित प्रभाव पड़े -
- राष्ट्र संघ को अमेरिका की आर्थिक और सैनिक शक्ति से वंचित होना पड़ा, जिससे उसकी शक्ति कम हो गई।
- अमेरिका के बाहर रहने से राष्ट्र संघ विश्व व्यापार संगठन नहीं बन सका। अमेरिका के सदस्य न बनने से जो राष्ट्र अपनी आशाएं और इच्छाएं पूरी नहीं कर पाए वे राष्ट्र संघ से अलग होने लगे।
- अमेरिका के अभाव में फ्रांस को दी गई एंग्लो-अमरीकन गारंटी व्यर्थ हो गई और अपनी सुरक्षा के लिए फ्रांस ने गुटबंदियों का सहारा लिया। जिससे राष्ट्र संघ और विश्व शांति पर बुरा प्रभाव पड़ा।

## SOMETHING TO GO ON WITH.

PRESIDENT WILSON (*to German Eagle*). "POOR OLD BIRD! DID IT SAY IT WAS BEING STARVED? WELL, HERE'S A NICE SQUARE MEAL FOR IT."

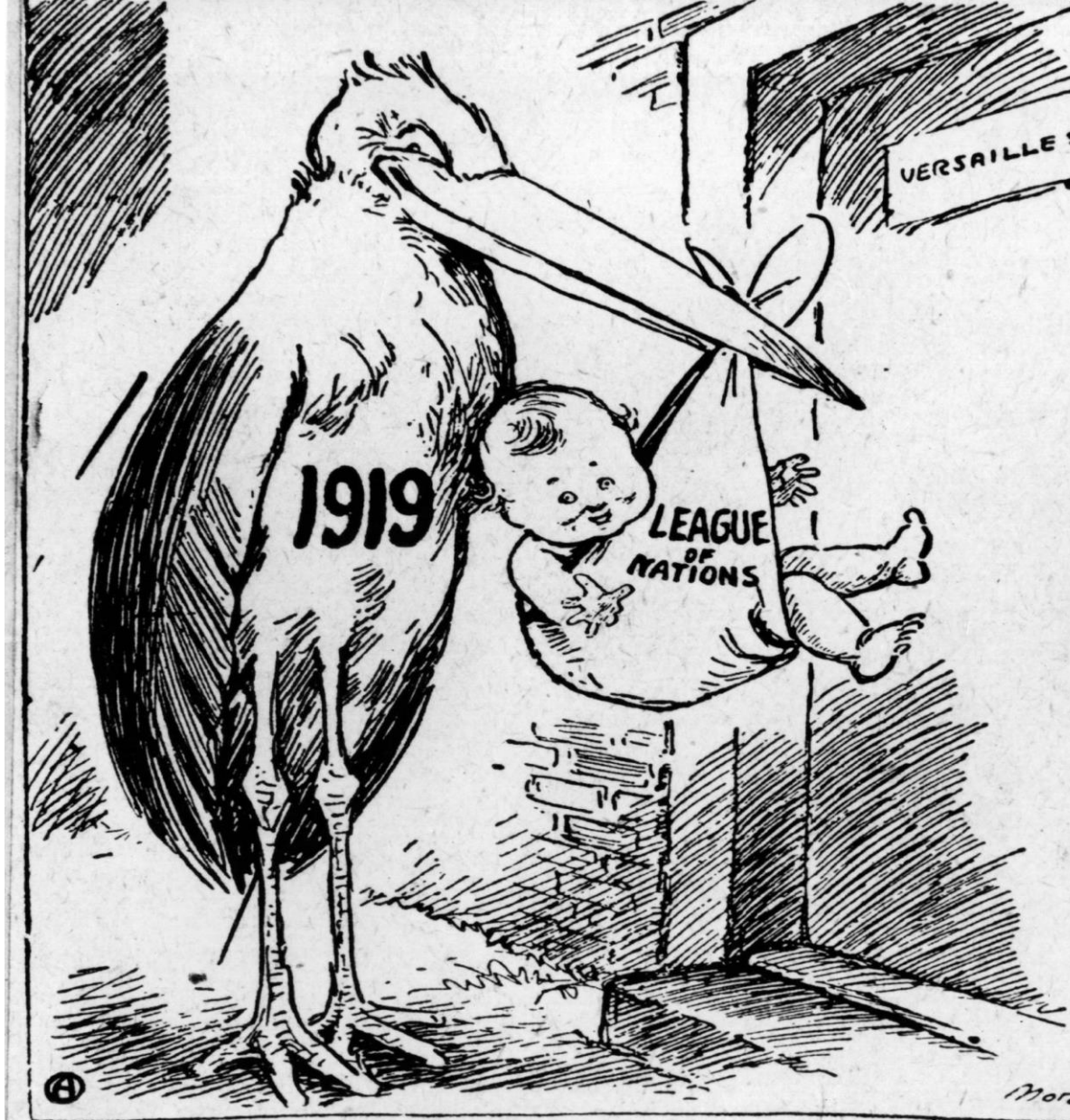


*Citizen.*] [Brooklyn,

## An Expected Arrival.

**Will the stork make good as to this infant**

- राष्ट्र संघ अमरीकी राष्ट्रपति विल्सन का विचार-शिशु था। लेकिन कांग्रेस ने अमरीका को इसका सदस्य बनने से मना कर दिया। राष्ट्र संघ की तरह ही संयुक्त राष्ट्र संघ की भी स्थापना में अमरीका में सबसे अग्रणी भूमिकानिभाई। उसके सदस्य मात्र बने रहने और समुचित सहायता देते रहने से यूएनओ अब तक कामयाब है, पर अमरीकी सदस्यता और सहायता के बिना राष्ट्र संघ बेमौत मारा गया। राष्ट्र संघ की विफलता का सबसे बड़ा कारण अमरीका सदस्य न बनना था. तभी तो किसी इतिहासकार ने कहा था. "राष्ट्र संघ अमरीका की संतान था जिसे जन्म लेते ही उसने यूरोप के दरवाजे पर छोड़ दिया था। "

## OVERWEIGHTED.

President Wilson. "HERE'S YOUR OLIVE BRANCH. NOW GET BUSY."
Dove of Peace. "OF COURSE I WANT TO PLEASE EVERYBODY; BUT ISN'T THIS A BIT THICK?"

# राष्ट्र संघ द्वारा युद्ध रोकने की ढीली व्यवस्था

- राष्ट्र संघ के विधान द्वारा युद्ध रोकने की ढीली ढाली की व्यवस्था की गई थी। प्रसंविदा की धारा 15 में अंतर्राष्ट्रीय विवादों को निपटाने की जो व्यवस्था थी, वह बहुत देरी करने वाली थी। विचार-विमर्श में ही काफी समय बीत जाता था और तब तक आक्रमणकारी को युद्ध की तैयारी करने का मौका मिल जाता था। धारा 16 के अंतर्गत भी कोई शक्ति पूर्ण कार्यवाही तब तक नहीं की जा सकती थी जब तक राष्ट्र संघ यह घोषणा न कर दे कि कोई राज्य ने संघ विधान का उल्लंघन करके युद्ध की घोषणा की है। युद्ध होने पर भी कोई राज्य अपना बचाव यह कहकर कर सकता था कि युद्ध मैंने शुरू नहीं किया है। इस प्रकार जानबूझकर की गई युद्ध को राष्ट्र संघ रोक नहीं सका।

- **घृणा पर आधारित** – राष्ट्र संघ की स्थापना का आधार घृणा थी, क्योंकि यह संघ वर्साय संधि की ही देन थी। वर्साय संधि की प्रथम 26 धाराएं राष्ट्र संघ का विधान थी। इस प्रकार यह राष्ट्र संघ का अभिन्न अंग था। पराजित राष्ट्र इस संधि को घृणा की दृष्टि से देखते थे और उसे अन्याय का प्रतीक मानते थे। अतः राष्ट्र संघ के प्रति उनकी दृष्टिकोण अनुदान हो गई। इस प्रकार वर्साय संधि का अंग मानकर जर्मनी ने राष्ट्र संघ को भी अस्वीकार कर दिया।
- इन सब कारणों का सम्मिलित प्रभाव यह रहा कि राष्ट्र संघ अपने सबसे बड़े दायित्व युद्धों को रोकने में नाकामयाब रहा। द्वितीय विश्वयुद्ध इसके लिए श्मशान घाट साबित हुआ।

- पर क्या यह कहना सही है कि राष्ट्र संघ द्वितीय विश्वयुद्ध को रोकने में विफल रहा? संस्था अपने आप में एक निर्जीव चीज हुआ करती है-इसे सजीव बनाते हैं इसके सदस्य व्यक्ति या सदस्य राष्ट्र। किसी संस्था की विफलता वास्तव में उसके सदस्यों की सामुदायिक विफलता हुआ करती है। इस आधार पर कहा जा है कि राष्ट्र संघ द्वितीय विश्ववयुद्ध रोकने में विफल नहीं हुआ, वरन उसके सदस्य राष्ट्र युद्ध को रोकने में नाकामयाब रहे। वास्तव में अगर हम साथ मिल कर जीने को तैयार नहीं हैं तो तय है कि हमने साथ मारना तय कर लिया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्र एसएनजीएच नहीं बल्कि प्रथम विश्वयुद्ध में जान और माल की भारी क्षति लोगों को युद्ध से बचाने का संदेश देने में विफल रही थी। शायद यह सीख विश्व समुदाय को द्वितीय विश्ववयुद्ध में होने भारी अप्रत्याशित तबाही से मिली।

## Suggested Readings

- 01. David Thompson — Europe Since napoleon
- 02 E.M. Lipson — Europe in the 19th 20th Centuries
- 03. Grant & Temperly — Europe in the 19th 20th Centuries
- 04. James Joll — Europe Since 1870
- 05 Y.J. Taraporevalla — Modern European History
- 06 A.J.P. Taylor — Struggle for Mastery over Europe
- 07 E.H. Carr — The Bolshevik Revolution, 1917 1923
- 08 A. Bullock — Hitler A Study in Tyranny
- 09 S.J. Wolf(ed) — European Fascism
- 10 C.D.M. Ketelby — History of Europe in Modern Times
- 11. पार्थसारथी गुप्ता — यूरोप का इतिहास
- 12. डी एन वर्मा एवं शिव कु. सिंह — विश्व इतिहास का सर्वेक्षण
- 13. लाल बहादुर वर्मा — आधुनिक यूरोप खंड-2
- 14. डी. एन. मेहता — आधुनिक यूरोप
- 15. देवेंद्र सिंह चौहान — आधुनिक यूरोप का इतिहास, भाग-1 && 2